Indian Streams Research Journal
ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

शुभदर्शन के काव्य संग्रह "संघर्ष बस संघर्ष" में मानवीय मूल्यों के विघटन पर चिंतन

जोगिता रानी [1] , डॉ.विनोद कुमार[2]
[1] रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग
[2]लवली प्रोफ़ैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

प्रस्तावना

मूल्यों का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है। मूल्य मनुष्य के जीवन का आधार होते हैं। इस लिए इनका सम्बन्ध समाज के साथ होता है। मूल्यों का कोई स्वरूप नहीं होता। यह महसूस किए जाते हैं। नई पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ी से इनको अर्जित करती है। लेकिन समय के साथ मूल्यों में भी परिवर्तन होता रहता है। इसीलिए मूल्यों को परिवर्तनशील कहा जाता है। 'आर. के. मुकर्जी की दृष्टि में जो कुछ भी इच्छित है, वही मूल्य है।'[1] अर्थात जिसे समाज अपनी इच्छा से ग्रहण करता है या जो चीज़ समाज के लिए उपयोगी है, वह मूल्य का रूप धारण कर लेती है। मूल्य सदैव व्यक्ति को विकास की तरफ लेकर जाते हैं। किसी सभ्यता के संस्कार, व्यवहार, विश्वास, संवेदना आदि मूल्यों के अंतर्गत आते हैं। मूल्य अदृश्य होते हैं, लेकिन मनुष्य के अंदर वास करते हैं। पुराने समय में मानवीय मूल्यों को बहुत महत्व दिया जाता था। संस्कार और आचरण के आधार पर ही व्यक्ति को परखा जाता था। बच्चे अपने माता-पिता की आज्ञा का

पालन करते थे और समाज के बनाए हुए नियमों का अनुसरण करते थे। लेकिन आधुनिक युग तक आते-आते मनुष्य अपनी सभ्यता, अपने संस्कार और अच्छा आचरण सब कुछ भूल गया है। रिश्तों में अपनापन खत्म हो गया है और उसकी जगह अविश्वास ने ले ली है। रिश्तों में जो मिठास थी, अब वो खत्म होती जा रही है। आशा तनेजा ने मानवीय मूल्यों में आ रही गिरावट का कारण आधुनिकता को माना है। उनके अनुसार, "आधुनिकता ने मानव का बहुत कुछ अपने में ही लील लिया है। मानव मूल्यों से रहित हो वह रिश्तों की मर्यादा को भी भंग करने लगा है।"[2]

एक साहित्यकार समाज के प्रत्येक पहलू को उजागर करता है और आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों में दिन-प्रति-दिन जो गिरावट आ रही है, यह एक गंभीर समस्या है। साहित्यकार भी इस समस्या से आहत हैं। सामाजिक सम्बन्ध टूटते जा रहे हैं। मानवीय मूल्यों के विघटन की समस्या को अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। जिनमें से निराला, नागार्जुन, धूमिल, रघुवीर सहाय, कुमार विकल आदि मुख्य है। इन कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से समाज के हर पक्ष पर प्रकाश डाला है। इनकी तरह ही आधुनिक युग के कवि शुभदर्शन ने भी अपने काव्य में मानवीय मूल्यों में आ रही गिरावट को प्रस्तुत किया है। आधुनिक युग का मानव मानवता भूल गया है। शुभदर्शन ने अपनी कविता को माध्यम बनाकर मानवीय मूल्यों में आ रही गिरावट पर चिंतन किया है और उसके प्रति अपने विद्रोह को प्रकट किया है। शुभदर्शन ने बताया है कि आज सारे आदर्श बनावटी हैं। कोई किसी के साथ बफादारी नहीं निभाता है। सबके मन में अविश्वास की भावना है। किसी के लिए दया और प्यार नहीं है। गरीब व्यक्ति का कोई साथ नहीं देता है। लोगों का मानसिक स्तर बहुत नीचे गिर चुका है। स्त्री के प्रति किसी पुरुष के मन में सम्मान नहीं है। आज के नौजवान एक लड़की को बुरी नज़र से देखते हैं। अगर कोई किसी के साथ बदसलूकी कर रहा है तो कोई किसी के लिए आवाज़ नहीं उठाता है। मनुष्य में मानवीय संवेदनाएँ नष्ट हो चुकी हैं। शुभदर्शन के काव्य के बारे में डेविड तेजा ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "अंधी निष्ठा एवं स्वामिभक्ति के प्रति विद्रोह एवं मूल्यहीन जीवन के प्रति वितृष्णा और बनावटी आदर्शवाद से मिले धोखे के प्रति कवि आहत मानसिकता को प्रस्तुत कर पाया है।"[3] शुभदर्शन ने अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में आधुनिक युग में मनुष्य में जो अविश्वास,

संस्कारविहीनता और संवेदनहीनता आ गई है, उसको अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

कवि शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से आधुनिक युग की संस्कारविहीनता पर चिंता प्रकट की है। आज की युवा पीढ़ी अपने संस्कारों को भूलती जा रही है। संस्कार मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व रखते हैं। विशेष रूप से भारतीय समाज में संस्कारों को सबसे अहम माना जाता है। यह मान्यता है कि संस्कारों से ही व्यक्ति के चरित्र का पता चलता है। एक बच्चा अपने परिवार से ही संस्कार ग्रहण करता है। कहते हैं कि कुम्हार मिट्टी को जैसा आकार देगा, वैसा ही घड़ा बनता है। ठीक उसी प्रकार माँ-बाप बच्चे को जैसे संस्कार देंगे, बच्चा उन्हीं संस्कारों को ग्रहण करेगा। लेकिन आधुनिक युग में माँ-बाप बच्चे को अच्छे संस्कार देने के लिए जागरूक नहीं हैं। वह तो अपने ही कार्यों में व्यस्त रहते हैं। वर्तमान युवा पीढ़ी अपने संस्कारों को भूलकर पतन की तरफ बढ़ रही है। संस्कारों से चरित्र का निर्माण होता है। संस्कारों से ही भविष्य उज्जवल होता है। लेकिन आज की युवा पीढ़ी नशे का सेवन, माता-पिता को वृद्ध आश्रम भेजना, जरूरत से अधिक धन अर्जित करने जैसी बुराईयों की तरफ बढ़ रही है। युवा पीढ़ी उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही है और अच्छे पद प्राप्त कर रही है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे अपने मूलभूत संस्कारों को ही भूल जाएँ। शुभदर्शन ने युवा पीढ़ी की इसी संस्कारविहीनता के प्रति अपनी विद्रोह भावना को प्रस्तुत किया है।

सुधा जितेंद्र ने शुभदर्शन के काव्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "आज के युग में हर चीज़ का मशीनीकरण हो गया है। न अहसास, न भाव, न भंगिमा न संस्कार, न मूल्य, न संस्कृति। आज की पीढ़ी हर चीज़ के लिए सॉफ्टवेयर चाहती है, ताकि उसे फिट कर आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सके, परंतु कवि आज के समाज की बहुत बड़ी समस्या की ओर गहराई से इशारा कर रहा है और वह समस्या है भावी पीढ़ी में संस्कारहीनता, मूल्यहीनता की।"[4] आज की युवा पीढ़ी पर सूचना प्रौद्योगिकी का गहरा प्रभाव पड़ा है। संस्कारों का क्या और कितना महत्व है, वे नहीं जानते। हर चीज़ के लिए वे सॉफ्टवेयर चाहते हैं जो उनके कार्य में सहायक सिद्ध हो। अपनी पुरानी मान्यताओं और मूल्यों की उनको कोई परवाह नहीं है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'संस्कार का सॉफ्टवेयर' में युवा पीढ़ी की संस्कारविहीनता को बखूबी अभिव्यक्त किया है-

"आज कंप्यूटर युग में,
बनाते हैं---बच्चे,
नए-नए सॉफ्टवेयर,
संस्कार कौन-सा सॉफ्टवेयर है,
पुछते हैं वे।"[5]

आज की युवा पीढ़ी संस्कारों को पीछे छोड़ती जा रही है। कवि शुभदर्शन को यह बात बहुत निराश करती है। आधुनिक युग अगर समाज में अच्छा पतिवर्तन लेकर आया है तो इसमें कुछ बुरी बातें भी हैं। पुराने समय में बड़ों की आज्ञा का पालन करना और छोटों से प्रेम आदि संस्कार सब में थे, लेकिन आधुनिक समय में यह सभी बातें लोप हो चुकी हैं। वर्तमान समय में युवा पीढ़ी हर चीज़ को एक सॉफ्टवेयर समझती है और जैसे चाहा उसका वैसे ही प्रयोग करना चाहती है। लेकिन वे यह बात भूल गए हैं कि संस्कार कोई सॉफ्टवेयर नहीं बल्कि उनकी संस्कृति है, जिसके बिना उनका जीवन निरर्थक है।

आधुनिक युग की जो मूल्य हीनता है, उसके प्रति कवि शुभदर्शन ने अपने विचारों को कविता के रूप में प्रकट किया है। आधुनिक युग में केवल संस्कारों में ही गिरावट नहीं आई है, अपितु लोगों में आपसी विश्वास भी कम हो गया है। किसी भी रिश्ते में विश्वास अहम होता है। बिना विश्वास के कोई भी रिश्ता खोखला माना जाता है। विश्वास एक ऐसी कड़ी है जो रिश्तों को हमेशा जोड़ कर रखती है। लेकिन आधुनिक समय में विश्वास की जगह अविश्वास ने ले ली है। कोई किसी पर विश्वास नहीं करता है। सभी एक-दूसरे को शक की नज़र से देखते हैं। पुराने समय में मनुष्य में जो आपसी प्रेम और विश्वास की भावना थी, वो अब कहीं भी दिखाई नहीं देती है। रिश्तों की जो विश्वास की बुनियाद थी, वो खोखली हो चुकी है। साहित्यकारों ने इसके प्रति अपनी निराशा को व्यक्त करने के लिए कलम का सहारा लिया है। आधुनिक युग में मनुष्य अपने गुणों को खो रहा है। जो मानवता, प्यार, सहानुभूति, दया, विश्वास आदि गुण मनुष्य में पाए जाते थे, अब धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं। शुभदर्शन ऐसे कवि

हैं, जो मानवता में अधिक विश्वास रखते हैं। लेकिन आधुनिक युग में मनुष्य अपने अच्छे गुणों को छोड़कर कुमार्ग पर चल पड़ा है। मनुष्य में यह जो अविश्वास की भावना आ गई है, उसके प्रति कवि शुभदर्शन ने अपना प्रतिरोध व्यक्त किया है। शुभदर्शन का मन मनुष्य में बढ़ रही अविश्वास की भावना के कारण आहत हुआ है। शुभदर्शन के इसी आहत मन के ऊपर विनय सिंह ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "आस्थाओं के डिग जाने से कवि बहुत विचलित है। कवि का मानना है कि आस्था और विश्वास सामाजिक रिश्तों की धुरी है। अगर ये ही खत्म हो जाएँ तो मानव की आस्थाएँ खत्म हो जाती हैं और स्वयं में भी बहुत कुछ खत्म हो जाता है।"[6]

शुभदर्शन की यह धारणा है कि व्यक्ति को अपना विश्वास नहीं खोना चाहिए। विश्वास पर ही दुनिया कायम है और सामाजिक सम्बन्धों की मजबूती के लिए आपसी विश्वास का होना अति-आवश्यक है। लेकिन आज वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति शंका जनक रहता है। आज का युग ही ऐसा है कि किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता है। विश्वास के नाम पर धोखा ही मिलता है। शुभदर्शन ने अपने काव्य में अविश्वास के अनेक रूपों को व्यक्त किया है। राजनीतिक पार्टियों के अविश्वास के अतिरिक्त पूँजीपति वर्ग के अविश्वास को भी उजागर किया है। माना गया है कि जब व्यक्ति के पास बहुत अधिक धन आ जाता है तो उसमें अहंकार घर कर जाता है। शुभदर्शन ने अपने काव्य में इस अविश्वास की भावना व्यक्त करने के लिए गौरैया के प्रतीक का प्रयोग किया है। गौरैया आधुनिक युग के मनुष्य का प्रतीक है जो आधुनिकता को ग्रहण करता-करता अपनी मानवता को भूल गया है। जब मनुष्य रूपी गौरैया के पास अपार धन आ जाता है तो वह अपना पुराना सब भूल जाती है। लोगों को फसाने और उनको धोखा देने में वह गौरव महसूस करती है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'सैय्याद गौरैया' में मनुष्य की इसी मानसिकता को उजागर करती है-

"अब किसी पर विश्वास नहीं करती,
बुन लिया है—अपने गिर्द,
अविश्वास का ऐसा जंगल,
जहां नहीं होता,
किसी फरियाद का असर।"[7]

मनुष्य रूपी गौरैया पूँजीपति होने के बाद किसी पर विश्वास नहीं करती है। धन ने उसकी सोच को संकुचित कर दिया है। जिसके कारण उसमें अहंकार आ गया है और वह अब किसी से कोई संबंध नहीं रखना चाहती। सबके विश्वास को तोड़ती है और किसी की कोई बात नहीं सुनती। उसके मन में किसी के लिए कोई दया भावना नहीं रही और वह किसी कोई फरियाद नहीं सुनती है। बदलते परिवेश ने मनुष्य को पूरी तरह से बदल दिया है। जीवन के पैमाने ही बदल गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे को संदिग्ध दृष्टि से देखता है। शुभदर्शन ने मनुष्य पर हाबी हो रही इसी आधुनिकता को व्यक्त करने का प्रयास किया है। मानवीय मूल्यों में गिरावट आने के कारण सभी अविश्वास की भावना से ग्रस्त हो चुके हैं। इसी के कारण आज आधुनिक समय में संयुक्त परिवार की परंपरा खत्म हो चुकी है।

आधुनिकीकरण के आने के साथ-साथ मशीनों और यंत्रों के बढ़ते प्रयोग ने आपसी सम्बन्धों के महत्व को कम कर दिया है। आज़ादी के बाद भारत में पूंजीवादी सभ्यता के प्रसार के साथ-साथ महानगरों का विकास भी हुआ। इन महानगरों में संसाधनों का अभाव था और आपसी प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ गई थी। इस प्रतिस्पर्धा की बजह से ही इन्सानियत के रिश्तों का विघटन तो हुआ ही आत्मीय सम्बन्धों में भी गरमाहट नहीं रही। आधुनिक युग में लोगों की भीड़ के बावजूद भी इन्सान अकेलेपन से घिरा हुआ है। भीड़ में मौजूद अनेक चेहरों में से वह किसी के साथ अपनी आत्मीयता का अनुभव नहीं करता है। डॉ. अविनाश शर्मा के शब्दों में, "उत्तर आधुनिक काल में मानवीय सम्बन्धों की डोर टूटती नज़र आ रही है। अब इन सम्बन्धों में वह उष्णता नहीं रही, रहा है केवल स्वार्थ, इस पनप रही बाजारी संस्कृति में विक्रेता और खरीददार के सम्बन्ध पनप रहे हैं।"[8]

साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से आधुनिक युग में रिश्तों के बनावटीपन और संवेदनहीनता को प्रस्तुत किया है। आधुनिक युग की भाग-दौड़ में व्यक्ति बहुत व्यस्त हो चुका है। उसके पास किसी के लिए भी समय नहीं है। यहाँ तक के मनुष्य के पास अपने लिए भी समय नहीं है। साहित्यकारों ने महानगरों की विषमताओं को प्रकट किया है। यह महानगरों का ही असर है कि मनुष्य संवेदनहीन हो गया है। जिस मनुष्य के पास अपने लिए समय नहीं है, उससे अपनत्व की उम्मीद कैसे की जा सकती है।

शुभदर्शन आधुनिक युग के समकालीन कवि हैं। शुभदर्शन ने अपने काव्य के द्वारा आधुनिक मानव की संवेदनहीनता को अभिव्यक्त किया है। कवि ने अपने काव्य में शहरी जीवन की विषमताओं को उजागर करने का प्रयास किया है। शहर में आकर व्यक्ति पैसा कमाने की अंधी दौड़ में लग जाता है, जिसके कारण सम्बन्धों में बिखराव आना शुरू हो जाता है। शहरी जीवन ने रिश्तों में जो अपनापन था, उसको नष्ट कर दिया है। शुभदर्शन ने आधुनिक युग में अहसासहीन होते जा रहे मनुष्य के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है। कवि ने मानवीय सम्बन्धों की इस अहसासहीनता के प्रति निराशा व्यक्त की है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'अहसास से बगावत' में मानवीय संवेदनहीनता को बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है-

"यहाँ उलझाव है,
आंटी और अंकल ने,
खत्म कर दिए हैं वे सब रिश्ते।"[9]

आधुनिक दौर में शहरीकरण हो जाने के कारण इन रिश्तों के मायने ही बदल गए हैं। शहरों के आंटी और अंकल के सम्बोधन ने गाँव में जो रिश्तों का अहसास था, उसको नष्ट कर दिया है। आंटी और अंकल बेगानेपन का अहसास कराते हैं। अनीता नरेंद्र के शब्दों में, "आधुनिकीकरण ने रिश्तों के मायने बदल दिए हैं, सब कुछ संवेदनाहीन और अहसासहीन हो गया है। शहर में आंटी और अंकल के सम्बोधन ने गाँव के रिश्ते खत्म कर दिए हैं।"[10] शहरी जीवन और मशीनीकरण ने मनुष्य को भावना रहित बना दिया है। शहर में भीड़ के होते हुए भी व्यक्ति स्वयं को अकेला महसूस करता है। शुभदर्शन जी ने अपने काव्य के माध्यम से आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों में आ रही गिरावट की अभिव्यक्ति की है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि शुभदर्शन ने मनुष्य की संवेदनहीनता को अपने काव्य में बहुत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। अपनी कविताओं में अहसास को बनाए रख और बनावटीपन छोड़ शुभदर्शन ने जीवन्त यातनाओं की अनुभूति से परिचित करवाया है। उनके अहसास में अपने परिवेश, व्यवस्था, परिस्थितियों के प्रति एक चुभन है। धोखा, फरेब, चालसाजी यह वर्तमान मनुष्य की प्रवृति बन चुका है। आज का मनुष्य अहसास हीन हो गया है। नए रिश्तों ने पुराने आत्मिक सम्बन्धों को नष्ट कर दिया है। शुभदर्शन की कविता में एक तीखापन है, जो व्यक्ति के मन को झकझोंर कर रख देती है। कवि ने घटती संवेदना, जड़ से उखड़ते जाने की त्रासदी, संस्कारविहीनता, ग्रामीण विरासत से बिखराव और मानवीय मूल्यों के विघटन की स्थितियों को परखा है और इन स्थितियों के प्रति अपने काव्य में विद्रोह को व्यक्त किया है।

संदर्भ सूची-

1. R.K. Mukerjee, Social structure of value, p- 21.
2. आशा तनेजा, ममत्व और बेगानेपन की संवेदनाओं का दस्तावेज़, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 96.
3. डेविड तेजा, निश्छल भावाभिव्यक्ति का रचनात्मक धरातल, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ-80.
4. सुधा जितेंद्र, कविताओं का संघर्षरत यथार्थवादी हाशिया, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ-144.
5. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ-55.
6. विनय सिंह, संघर्ष से उकरी गंगा के पड़ाव, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ-42.
7. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ-78.
8. अविनाश शर्मा, साहित्यावलोकन: सृजन एवं शोध पत्रिका, अंक-5, पृ-60.
9. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ-33.
10. अनीता नरेंद्र, संघर्ष की समय सापेक्ष अभिव्यक्ति, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ-32.

जोगिता रानी
रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग